UTTARAKHAND@25%Looking Back Looking Forward

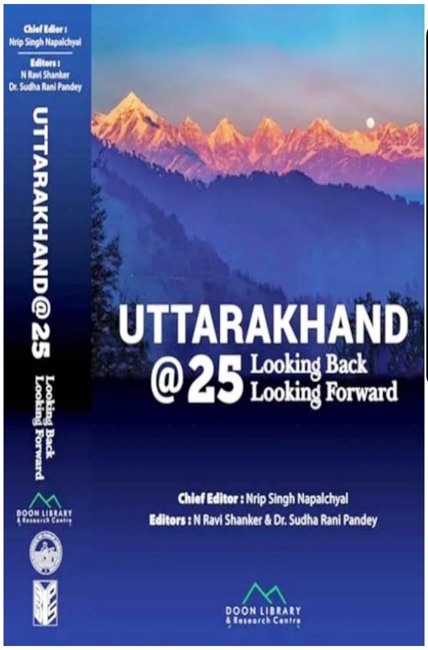

RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 28 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 15 दिसम्बर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती, स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया, स्व.श्रीमती कमला उप्रेती
editorpighaltahimalay@gmail.com Website- www.pighaltahimalay.com
सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल, मंगल सिंह मर्तोलिया

सीएम ने किया विमोचन

पि.हि. प्रतिनिधि

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मुख्यमंत्री आवास में 'उत्तराखण्ड@25: लुकिंग बैक-लुकिंग फारवर्ड' पुस्तक का लोकार्पण किया। उत्तराखण्ड राज्य गठन के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र की ओर से उत्तराखण्ड@25 शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित की गयी है।

पुस्तक लोकार्पण के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि यह पुस्तक राज्य की अब तक की प्रगति पर उत्कृष्ट विश्लेषण प्रस्तुत करने के साथ ही आने वाले समय में राज्य के समग्र विकास को एक नई दिशा भी प्रदान करेगी। पुस्तक में शासन-प्रशासन, आर्थिक विकास, पर्यावरण संतुलन, ग्रामीण पलायन, आपदा प्रबन्धन, स्वास्थ्य एवं शिक्षा, महिला सशक्तीकरण, कृषि, संस्कृति और पत्रकारिता जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषयों पर विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने अपने गहन विचार प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह पुस्तक नीति-निर्माण और शोधकर्ताओं के लिए लाभदायक सिद्ध होगी और उत्तराखण्ड के सतत, समावेशी और समग्र विकास की दिशा में योगदान देने के लिए लोगों को प्रेरणा देगी। इसके प्रकाशन के लिए उन्होंने दून पुस्तकालय एवं शोध केंद्र तथा भारतीय लोक प्रशासन संस्थान के पदाधिकारियों, लेखकों और सम्पादक मण्डल का आभार भी व्यक्त किया। मुख्य मंत्री ने दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के कार्यों पर सन्तोष व्यक्त करते हुए कहा कि यह संस्थान पुस्तक पठन-पाठन, युवाओं के प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने अकादमिक गतिविधियों व बौद्धिक विचार विमर्श का एक आदर्श केन्द्र के रूप में अपना स्थान बना रहा है। उन्होनें यथासम्भव सरकार की ओर से इसे सहयोग देने का भी आश्वासन दिया।

उत्तराखण्ड@25: लुकिंग बैक-लुकिंग फारवर्ड
विकास यात्रा और भविष्य की सम्भावना

कार्यालय प्रतिनिधि

इस पुस्तक में उत्तराखण्ड राज्य की विगत 25 वर्षों की विकास यात्रा तथा भविष्य की सम्भावनाओं पर विषय विशेषज्ञों तथा अनुभवी विद्वानों द्वारा 7 विषयवार खण्डों के अन्तर्गत अंग्रेजी और हिन्दी माध्यम में कुल 28 आलेख संकलित हैं। इस पुस्तक का मुख्य सम्पादन श्री नृप सिंह नपलच्याल, पूर्व मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन तथा सम्पादक मण्डल के दो अन्य सदस्यों- श्री एन.रवि शंकर, पूर्व मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन तथा डॉ. सुधा रानी पाण्डेय, पूर्व कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय की कुशल देख-रेख में किया गया है।

अनुभवी प्रशासकों, शिक्षाविदों, अर्थशास्त्रियों, वन अधिकारियों, रक्षा एवं सामरिक विश्लेषकों, पत्रकारों, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं और पेशेवर लेखकों ने अपने सारगर्भित आलेखों के माध्यम से उत्तराखण्ड राज्य की एक चौथाई सदी की यात्रा पर गहन प्रकाश डालने का प्रयास किया है। प्रस्तुत पुस्तक में विद्वत लेखकों ने जहाँ विकास उपलब्धियों को रेखांकित किया है वहीं इसकी तमाम चुनौतियों और खतरों की भी पड़ताल की है और साथ में कई कारगर समाधान भी सुझाए हैं। एक तरह यह पुस्तक उत्तराखण्ड के भविष्य के बारे में भी बात करती प्रतीत होती है।

इस महत्वपूर्ण सन्दर्भ पुस्तक में लोक प्रशासन एवं सुशासन, आर्थिक विकास, विकास और पर्यावरण के मध्य सचेत सन्तुलन, विकास की दिशा, पहाड़ के ग्रामीण इलाकों से बड़े पैमाने पर पलायन और उससे जुड़ी आन्तरिक सुरक्षा जैसे बिन्दुओं पर विशेष बल दिया गया है। सतत पर्यावरण, वन्य जीव तथा मानव-वन्य जीव संघर्ष की चुनौतियां, जलवायु परिवर्तन, आपदाएं, चुनौतियां और उसका निवारण, समुदाय के मूलभूत तत्वों स्वास्थ्य, शिक्षा व अन्य अवस्थापना संरचना सुविधाओं पर विशेष उल्लेख किया गया है। इसके अलावा उत्तराखण्ड की महिलाओं की स्थिति, परम्परागत ज्ञान, खेती, बागवानी व कृषि निवेश पर भी लेखकों ने अपने सारगर्भित विचार प्रकट किये हैं। प्रस्तुत पुस्तक में साहित्य, कला, संस्कृति व पत्रकारिता जैसे विषयों पर भी पृथक से उल्लेख किया गया है।

उत्तराखण्ड की 25 सालों की विकास यात्र पर अनुभवी विद्वत जनों के लिखे यह सभी आलेख उपयोगी हैं, जो इस राज्य के आगामी 25 सालों के भविष्य निर्धारण में नीति नियन्ताओं व योजनाकारों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करेंगे। आशा की जानी चाहिए कि एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के तौर पर यह पुस्तक विकसित भारत और विकसित उत्तराखण्ड की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी।

इस पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम में दून पुस्तकालय के मानद निदेशक श्री एन.रवि शंकर ने मुख्य मंत्री और मंचासीन लेखक गणों और उपस्थित लोगों का हार्दिक स्वागत

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

ज्ञान-विज्ञान को पीढ़ियों तक संजोने वाले वेदव्यास

सूर्यकान्त बाली

एक छोटे से आलेख में महर्षि वेदव्यास का इस देश की सभ्यता को योगदान बता पाना सम्भव नहीं। पर इसका कोई विकल्प तौर पर महाभारतकर्ता के रूप में जानते हैं, जो कि ठीक ही है। पर यकीनन व्यास के बारे में इतनी जानकारी बेहद अधूरी है। लगभग आठ पीढ़ियों के जुड़े वेदव्यास की आयु कितनी लम्बी रही होगी, इसका अन्दाजा आसानी से लगाया जा सकता है। और जैसा कि हम एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को औसत पच्चीस से तीस वर्ष का समय देकर चल रहे हैं, तो व्यास की आयु दो सौ और ढाई सौ वर्षों के बीच ही कहीं रखी जा सकती है, इससे कम नहीं। और ये आठ पीढ़ियाँ कौन सी हैं? कृपया नाम नोट कर लीजिए- शन्तनु, विचित्रवीर्य, धृतराष्ट्र, युधिष्ठिर, अभिमन्यु, परीक्षित, जनमेजय, शतानीक। इतनी लम्बी आयु जीने वाले वेदव्यास ने अपने जीवन का एक-एक पल सार्थक रूप से लिया।

महर्षि व्यास पराशर मुनि के पुत्र थे। एक बार सत्यवती जब उन्हें अपनी नाव में बिठाकर नदी पार कर रहे थीं, तो सत्यवती के सौन्दर्य से मुग्ध पराशन ने उससे उस नाव में सहवास कर लिया और सत्यवती गर्भवती होग गई। व्यास का जन्म उसी गर्भ से हुआ। विचित्र बात यह है कि स्वयं सत्यवती अद्रिका नाम की किसी अप्सरा की सन्तान मानी जाती है और सत्यवती-पुत्र व्यास भी आगे चलकर कभी धृताची नाम की अप्सरा से आकृष्ट हो गए थे और इस अप्सरा से उन्हें शुकदेव नामक परमज्ञानी पुत्र की प्राप्ति हुई थी। इन व्यास का जन्म आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व किसी वैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था, पर उनके ठीक-ठीक जन्म वर्ष के विषम में विद्वानों में मतभेद कायम है। व्यास का रंग काला था, इसलिए इनका नाम कृष्ण था। पर उसी युग में कृष्ण के लिए उनका नाम रख दिया गया-कृष्ण द्वैपायन, अर्थात् वे कृष्ण जो द्वीप में पैदा हुए थे। व्यास के बारे में एक मजेदार सूचना यह है कि इन्हें महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्मों में से एक माना जाता है। बौद्ध परम्परा के अनुसार बुद्ध बनने से पहले सिद्धार्थ ने अनेक पूर्व जन्म बिताए थे, जिनमें वे ज्ञान की क्रमशः प्राप्ति करते गए। इन पूर्व जन्मों में बुद्ध को बोधिसत्व कहा गया है। ऐसे अनेक वोधिसत्वों में से एक का नाम कण्ह द्दैपायन (कृष्ण द्वैपायन) कहा गया है। जो लोग बौद्धों और हिन्दुओं को अलग साबित करने के लिए लट्ठ उपाए फिरते हैं, यह सूचना उन्हें कुछ निराश कर सकती है। व्यास ने अपने जीवनकाल में बद्रीआश्रम में घोर तपस्या की थी। यह आश्रम हिमालय में सरस्वती और अलकनन्दा के संगम पर था। यहाँ तप करने के कारण व्यास का नाम बादरायण मुनि पड़ गया। तप का और प्रभाव हुआ सो हुआ, इसके कारण व्यास को दूरदृष्टि प्राप्त हो गई। महाभारत युद्ध के वक्त यही दूरदृष्टि उन्होंने धृतराष्ट्र को देनी चाही थी, पर धृतराष्ट्र डर गए तो फिर संजय को उन्होंने यह सुविधा युद्ध के समय के लिए प्रदान की। जरा सोचिए तो, एक आदमी शन्तनु के समय से लेकर जनमेजय के सर्पयज्ञ के समय ही नहीं, उसके बाद तक जीवित रहा तो क्या उसका जीवन उसके लिए भार नहीं हो गया होगा? व्यास का जीवन अगर भार नहीं हुआ तो उसका कारण साफ है कि उन्होंने अपने जीवन में इतने अद्भुत काम कर दिए जो किसी एक व्यक्ति के लिए लगभग असम्भव मान लिए जाएंगे। पर व्यास ने वह सम्भव कर दिखाया।

भाषा के साथ जिनका परिचय सामान्य से अधिक है, वे जानते है। कि व्याकरण और भाषा विज्ञान में एक शब्द है- समास, जिसका अर्थ है संक्षेप। समास से उल्टा एक शब्द है व्यास और इसका अर्थ है विस्तार। विशेषणवाची बन जाने पर व्यास का अर्थ हो जाता है, वह व्यक्ति जिसने विस्तार कर दिया हो। आज भी हमारे देश में कथावाचकों की गद्दी को व्यास गद्दी करते हैं, क्योंकि कथावाचक वे लोग होते हैं, जो उदाहरण और दृष्टान्त देकर, कई तरह की कथाएं-उप कथाएं सुनाकर कथा को खूब फैला देते हैं। कृष्ण द्वैपायन का नाम अगर व्यास पड़ गया तो सवाल है, उन्होंने किस चीज का विस्तार किया? उत्तर उनके पूरे नाम वेदव्यास में निहित है, अर्थात् उन्होंने वेदों का विस्तार किया। अर्थ यह नहीं कि उन्होंने कोई बहुत सारे मंत्र लिख दिए। बल्कि सच्चाई यह है कि उनके नाम से एक भी मंत्र हमें लिखा नहीं मिलता। उन्हें वेदव्यास इसलिए कहा जाता है कि वेदों की चार संहिताओं का यानी यजुर्वेद संहिता, ऋग्वेद संहिता, सामवेद संहिता और अथर्ववेद संहिता का जो रूप हमें आज मिलता है उसे वह रूप वेदव्यास ने दिया है और इसीलिए उनका नाम वेदव्यास पड़ गया है। ऐसा नहीं है कि इससे पहले वे चार संहिताएँ नहीं थीं, बल्कि परम्परा यह है कि इससे पहले भी समय-समय पर संहिताओं को बाकायदा ग्रन्थ रूप मिलता रहा और उनमें अधिकाधिक सूक्त जुड़ते चले गए। लेकिन वेदव्यास की खूबी यह है कि

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

शैक्षणिक संस्थानों में यौन शोषण की घटनाएं

शैक्षणिक संस्थानों में यौन शोषण की घटनाएं देखते हुए प्रदेश के सभी विद्यालयों में विद्यार्थियों की सुरक्षा को सख्त कदम उठाए गए हैं। विभागीय मंत्री डॉ. धन सिंह रावत के निर्देश के क्रम में सभी जनपदों के मुख्य शिक्षा अधिकारियों को ऐसी घटना की पुनरावृत्ति रोकने को जनपद स्तर पर निगरानी सुरक्षा प्रोटोकॉल सख्ती से लागू करने को कहा गया है। साथ ही राज्य स्तर पर भी समय-समय पर इसकी समीक्षा की जायेगी।

चमोली के राजकीय इण्टर कालेज गौणा में अतिथि शिक्षक युनुस अंसारी द्वारा छात्र-छात्राओं के यौन शौषण की घटना के प्रकाश में आने के बाद चारों ओर चर्चा होने लगी थी कि शैक्षणिक संस्थानों में यह सब क्या होने लगा है। इस बीच राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बेरीनाग के संगीत विभाग के कर्मचारी तबला वादक भी छेड़छाड़ के आरोप में घेरे में आ गये। इससे पहले भी छेड़छाड़ की घटनाएं अन्य जगह हो चुकी हैं।

शैक्षणिक संस्थानों में इस प्रकार के अपराध क्यों बढ़ते जा रहे हैं? हो यह रहा है कि किसी घटना के प्रकाश में आ जाने के बाद सबका गुस्सा वहीं फूटता है जबकि इस प्रकार की अपराधों को रोकने के लिये पहले से ही सख्ती जरूरी है। कहा जा रहा है कि बालिकाएं असुरक्षित हैं, माहौल बिगड़ता जा रहा है लेकिन तमाम घटनाओं की पड़ताल की जाए तो अलग-अलग तरह के मामले दिखाई देते हैं। किसी घटना में नाबालिकों को बहला कर उनका शोषण किया गया है तो किसी घटना में हवस का शिकारी लोभ-लालच देकर बालिकाओं को फंसाता है, किसी घटना में दोनों पक्ष राजी हैं और बात पूरी न होने पर एक पक्ष पर आरोप लगाकर फंसा दिया जाता है तो किसी घटना में महिला होने का लाभ उठाया जाता है। इसके अलावा भी बातें होती हैं। इन सबके पीछे कारण अतृप्त आत्माओं को सक्रिय होना है।

शैक्षणिक संस्थाएं ही क्या, अन्य जगह भी सभ्यता का प्रदर्शन होना चाहिये। समाज में जिस प्रकार से नग्नता का वातावरण तैयार किया जा रहा है, मोबाइलों की रील और भौंडे नाच होने लगे हैं, इन सभी का कचरा फैलता जा रहा है और अपराधों की बाढ़ आ रही है। हमारी बच्चे सुरक्षित रहें, हमारे युवा सही दिशा में हों और हमारे बूढ़े मार्गदर्शन करें, इस प्रकार माहौल बनाने के लिये किसी भी तरह की चटोरेबाजी से दूरी जरूरी है। किसी सरकारी फरमान या कानून का भय अपनी जगह है लेकिन समाज को सही दिशा में ले जाने के लिये हाक तो लगानी ही होगी।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

चांद से मिट्टी के नमूने लाएगा चन्द्रयान-4

चेन्नई। भारतीय अनुसंधान संगठन (इसरो) 2028 तक भारी लैंडर और रोवर के साथ चन्द्रयान-4 लूनर मिशन लॉन्च करने की योजना बना रहा है जो प्रयोग के लिए चांद से नमूने लेकर धरती पर वापस आएगा। इसरो चैयरमैन डॉ. वी. नारायणन ने मिशन के बारे में जानकारी दी।

चक्रवात के बाद भारत की अग्रणी भूमिका

कोलम्बो। राष्ट्रपति अनुरा कुमार दियानायके के कार्यालय ने कहा कि चक्रवात दितवा के बाद भारत ने तत्काल आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रयासों में अग्रणी भूमिका निभाई है। इस चक्रवात में 400 से अधिक लोग मारे गए और व्यापक तबाही हुई।

पश्चिमी हाथों में खेल रहे सेना प्रमुख मुनीर

लाहौर। जेल में बन्द पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने सेना प्रमुख फील्ड मार्शल असीम मुनीर की नीतियों को देश के लिये विनाशकारी बताते हुए आरोप लगाया कि वह पश्चिमी हाथों में खेल रहे हैं। कहा मुनीर अफगानिस्तान के साथ जानबूझकर तनाव बढ़ा रहे हैं।

बिना दबाव भारत को तेल आपूर्ति होगी

नई दिल्ली। रूस के के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भारत दौरे में कहा कि भारत को बिना दबाव के के तेल आपूर्ति होती रहेगी। नई दिल्ली में भारत-रूस के 23वें शिखर सम्मेलन के दौरान पुतिन और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पंचवर्षीय आर्थिक मसौदे पर सहमति जताई। दोनों देशों ने अपनी मित्रता को अटूट बताया।

न्यूयॉर्क टाइम्स ने पेंटागन पर ठोका मुकदमा

वाशिंगटन। अमेरिकी मीडिया हाउस 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' ने अमेरिका रक्षा विभाग के खिलाफ मीडिया पर लगाए गए प्रतिबन्धात्मक नियमों को लेकर मुकदमा दायर किया है। अखबार का आरोप है कि मंत्रालय की यह नीति संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान के प्रथम संशोधन का उल्लंघन करती है।

फसक

दाज्यू, दूसरे के मन की भी करनी ठैरी

अकड़म-बकड़म सबकुछ साथ-साथ हो रहा है बल

दाज्यू, प्रधान मंत्री मोदी ज्यू ने इस बार फिर से मन की बात में उत्तराखण्ड पर बोला और शीतकालीन पर्यटन के ब्रांडिंग की बात कही। हमें बहुत अच्छा लग रहा है लेकिन गबलू कह रहा है- 'किस-किस के मन की पूरी करें?' दाज्यू, धारदार समय चल रहा है। गबलू को समझना चाहिए कि सबके मन की करनी ठैरी। जिसके मन की नहीं हुई वह धुंआ निकालने को तैयार है।

दाज्यू, अकड़म-बकड़म सबकुछ साथ साथ हो रहा है बल। अर्द्धकुम्भ 2027 को लेकर बीते दिवस डाम कोठी में मुख्यमंत्री पुष्कर धामी की सभी तेरह अखाड़ों के प्रतिनिधियों के साथ हुई बैठक में सभी सन्तों को नहीं बुलाने पर आश्रम धारी और स्नान धारी सन्त भड़के हुए हैं। उन्होंने अखिल भारतीय आश्रम परिषद का गठन करने की घोषणा कर दी।

रुद्रपुर में एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स और दिनेशपुर पुलिस ने दो स्मैक तस्करों को पकड़ा है, जिनके पास से 40 लाख की स्मैक बरामद हुई बल। दाज्यू, काशीपुर में एक नाबालिग के साथ दुष्कर्म कर वीडियो बनाने की शिकायत पुलिस को दी गई है। दाज्यू, बेरीनाग डिग्री कालेज में तबला वादक पर छात्राओं से छेड़छाड़ के मामले पर हंगामा हुआ। कर्मचारी को सम्बद्ध कर दिया है बल। महिला आयोग ने मामले का स्वत: संज्ञान लेते हुए कठोर कार्रवाई के निर्देश दिये हैं। दाज्यू, किसके मन की क्या जानें? प्रकरण है तो गम्भीर।

भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता विकास भगत ने पत्रकारों से कहा- 'प्रदेश सरकार ने अवैध रोका है और नकल विहीन परीक्षाएं आयोजित की गई हैं। युवाओं को पारदर्शिता के साथ नौकरियां मिल रही हैं।' दाज्यू, विकास की बात सुनकर हमने धूपबत्ती सुलगा दी है पर क्या करें कालाढूंगी में हिन्दूवादी नेता विपिन पाण्डे ने ऐलान कर दिय है कि वह 2027 का चुनाव लड़ेंगे। विपिन पाण्डे अपने माननीय विधायक बंशीधर भगत पर भड़कते हुए कहते हैं- 'कालाढूंगी में वह भगत किसी दूसरे को नहीं देखना चाहते हैं। अपने पुत्र मोह में मनमानी कर रहे हैं।' दाज्यू, नीति की बात कौन करेगा? राजनीति हम जानते नहीं। अब आप ही फैसला कर दो क्या किया जाए। पार्टी टिकट का फैसला तो पार्टी वाले ही करेंगे।

उत्तराखण्ड को नशा मुक्त बनाने की दिशा में काम हो रहा है बल। किच्छा पुलिस ने पुलभट्टा के पास बरेली से स्मैक तस्करी करने वाले दम्पत्ति सहित चार कुख्यात बदमाशों को गैंगेस्टर में पकड़ लिया है। पुलिस की कार्रवाई पर अपना गज्जू हंस रहा है। कह रहा था- 'गांजे का, भांग का, शराब का, चरस का, स्मैक का नशा करने वाले अगल-अलग तरह के होते हैं। इसी प्रकार पुलिस पकड़ भी अलग-अलग तरह की होती है।' दाज्यू, गज्जू दा अनुभवी ठैरा, हम क्या जो कहें? अल्मोड़ा की यूट्यूबर एवं कलाकार भावना काण्डपाल ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि उनकी फेक अश्लील वीडियो वायरल कर रुपये मांगे जा रहे हैं। दाज्यू, यदि ऐसा है तो बहुत ही बुरी बात। उधर हरक सिंह रावत के वीडियो वायरल हो रहे हैं जिसमें वह कयच्च करके बोल देते हैं। -तुम्हारा भुली झकरुवा

विकास यात्रा और.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

किया। इस अवसर पर पुस्तक के मुख्य सम्पादक एन.एस. नपलच्याल ने पुस्तक के सन्दर्भ में परिचय देते हुए उसके विषय वस्तु, विशेषताओं तथा लेखक गणों का उल्लेख किया। कार्यक्रम के अन्त में दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र के अध्यक्ष प्रो. बी.के. जोशी ने अपने अध्यक्षीय व धन्यवाद वक्तव्य में केन्द्र का ऐतिहासिक परिचय, परिचालन व गतिविधियों को बताया और केन्द्र के सुचारू संचालन और भावी आवश्यकताओं के लिए, सरकार से समुचित सहयोग की अपील की। उन्होंने इस सन्दर्भ में मुख्यमंत्री को दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र की ओर से एक ज्ञापन भी दिया। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र के प्रोग्राम एसोसिएट चन्द्रशेखर तिवारी ने किया।

इस अवसर पर डा. सुधारानी पाण्डेय, पूर्व मुख्य सचिव इन्दु कुमार पाण्डेय, श्रीमती राधा रतूड़ी, पूर्व डीजीपी अनिल रतूड़ी, जयराज, समीर सिन्हा, प्रो. डी. आर पुरोहित, पंकज नैथानी, डा.आर.पी. ममगाई, आलोक बी.लाल, बिनीता शाह, मंजू काला, डा. एस.एस. नेगी, डा. ज्योतिष घिल्डियाल लवतीना मोदी, कर्नल एस. एस. रौतेला, डा.लालता प्रसाद, डा. अरुण कुकसाल, दीवान बोरा, जगदीश सिंह महर, पंकज शर्मा, राकेश कुमार सहित पुस्तक के लेखक गण एवं विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोग उपस्थित थे।

11 साल बाद हुई गणना, तराई भाबर में मिले 212 मगरमच्छ

हल्द्वानी। तराई भाबर में 11 साल मगरमच्छों की गणना में उत्साहजनक परिणाम मिले हैं। उधमसिंह नगर व नैनीताल जिलों में 212 मगरमच्छ मिले हैं। वन विभाग का दावा है कि फरवरी में एक बार फिर से गणना कराई जाएगी, जिसमें मगरमच्छों की संख्या में वृद्धि हो सकती है। तराई पूर्वी वन डिवीजन के जंगल 82489 हेक्टेयर में नैनीताल व उधमसिंह नगर में फैले हुए हैं। वन डिवीजन में नानकसागर, शारदा कैनाल, गौला, हरिपुरा, बौर, सुरई आदि के जंगलों में नदियां व जलाशय हैं। इनमें बीती 2-3 दिसम्बर को मगरमच्छों की गणना पूरी हुई और उत्साहजनक परिणाम रहे। वनाधिकारियों के अनुसार मगरमच्छों की गिनती डायरेक्ट साइटिंग मेथड से हुई। इस वर्ष पहली बार रात में बोट पेट्रोलिंग का इस्तेमाल करके भी गिनती की गई। विभाग के पास मानव-मगरमच्छ संघर्ष के लिहाज से हॉट स्पॉट पूर्व से ही चिन्हित हैं, ऐसे में जागरूकता कैंपन प्लान बनाए गए हैं

बैठक के बाद तय, नैनीताल में फिर शुरू होगा विंटर कार्निवाल

नैनीताल। अपर जिलाधिकारी विवेक राय की अध्यक्षता में प्रशासन और होटल एसोसिएशन की बैठक में तय किया गया कि सरोवर नगरी में फिर से विंटर कार्निवाल शुरू होगा। बैठक में 2017 तक आयोजित हुए विंटर कार्निवालों के फीडबैक की समीक्षा करते हुए इस वर्ष कार्यक्रम के स्वरूप, प्रबन्धन और आयोजन की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की गई। माना जा रहा है कि 23 से 25 दिसम्बर तक यह आयोजन होगा। बताते चलें कि होटर एसोसिएशन पहले भी विंटर कार्निवाल शुरू करने बारे में ज्ञापन दे चुका है।

बिजली दरों में बढ़ोतरी जनविरोधी

हल्द्वानी। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्या ने कहा कि बिजली दरों में 16.23 प्रतिशत की बढ़ोतरी का प्रस्ताव ऊर्जा निगम बोर्ड ने पास कर दिया है। इससे साफ है कि आने वाले दिनों में बिजली उपभोक्ताओं पर बड़ी मार पड़ने वाली है। कहा कि आम जनता पहले ही महंगाई की मार से त्रस्त है। अब ये जनविरोधी फैसला है

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

इतिहास/शोध

किरकुट गाड़ (धपुवा बगड़) तथा राजुला शौक्यानी का ज्ञान-ध्यान स्थल

जगदीश सिंह बृजवाल

हिमवर्ती क्षेत्र, प्राचीन समय में निवास करने वाली आदम जातियां - किन्नर, किरात, यक्ष, गन्धर्व नाग, कौल, भील, निषाद, कुणद, तंगण, पतंगण का समृद्ध इतिहास प्राचीन ग्रन्थ रामायण, महाभारत के वनपर्व में भी उद्धृत हैं। आज भी आग्नेय भाषाई शब्द पति के लिए 'बेग', मांस के लिए 'ढ्योर' नदि के लिए 'बगर' शब्द का उपयोग जोहारी भाषा में किया जाता है। पुरानी जोहारी रंकश, शौकीया खून की समाप्ति के बाद जोहारी बोली शैली कुमाउंनी, तिब्बती, नेपाली, अंग्रेजी, किरान्ती के मिश्रण से बनी है। अंग्रेज भाषाविद गिर्यसन ने इसे भी भाषा श्रेणी में स्थान दिया है।

आधुनिक जनों तक जानकारी प्रसिद्ध प्रेम कहानी नायक-नायिका बेराट के सूर्यवंशी राजकुमार मालुशाही व शौकाट के प्रभुत्वशाली व्यक्ति की रूप लावण्य पुत्री राजुली शौकयानी से सम्बन्धित तथ्यागत साक्ष नदी किनारे पर्णस्थल जिसकी अनभिज्ञता इतिहास का गहराई से अध्ययन कर दूर किया जा सकता है।

मुनस्यारी, पश्चिम बलांती हिमनद से निकलने वाली नदी वर्तमान मुनस्यारी के धपुवा गाँव के पास गोरी नदी में मिल जाती है। किरकुटी का शाब्दिक अर्थ किर=गाड (नदी) कुटी-झोपड़ी अर्थात नदी किनारे पर झोपड़ी। आज, सौकाट के प्रभाव शाली व्यक्ति सुनपति शौका का निवास स्थान पीलोखान=पीले धातु का भण्डारण। (स्वर्ण भण्डार) था। ल्वांल जाति में उत्पन्न, जो कत्यूरी,चंद शासन तक स्वर्ण आदि व्यापार करते थे। जिनका देवस्थल आज का 'द्योथान' था। जिनकी रूपवती कन्या नित्य अपने सखी सहेलियों के साथ किरकुटिया के पास पहुँचकर स्नानादि के बाद पर्णशाला में ध्यानादि से आध्यात्मिक ज्ञान, आत्मबल की प्राप्ति करती थी।

यद्यपि गोरी गंगा के किनारे कोई भी तीर्थस्थल, घाट, मन्दिर कोई परम्परा के अवशेष न हो किन्तु किरकुटी गाड के विषय पुरानी जनश्रुति आज भी लोगों के मुंह सुनी जा सकती है। पुराणों में गोरी गंगा के किनारे लखनपुर का उल्लेख मिलता है, गोरिल देवता (गोलू) की कुछ कहानी का अंश गोरी गंगा किनारे से ही सम्बन्धित है।

गौरीगंगा त्रिशुली, हरदेव हिमपर्त के हिमानी से निकलकर लगभग 100 किमी का अपना सफर जौलजीबी में काली नदी से मिलन के बाद संगम पर समाप्त करती है। आज इतिहास के गहराई तक का अध्ययन तार्किक तथ्यात्मक आधार, प्रामाणिकता को तर्कसंगत शोध व खोज जोहार भूमि का इतिहास तक जानकारी भी अति आवश्यक है तभी इतिहास की परिपूर्णता होगी।

धार्मिक-पर्यटन स्थल

चंद वंश के राजा बाजबहादुर का पसंदीदा स्थान कौसानी

प्रयाग रावत

महात्मा गाँधी जी के योग से लेकर सुमित्रा नन्दन पन्त की कविता कल्पना को पँख लगाने मे अलग से आवोहवा देने वाले पर्यटक स्थल कौसानी में ही सरला बहन आश्रम, लक्ष्मी आश्रम के अलग से विविध क्रिया कलाप है होते हैं। चाय बागानों के लिये भी कौसानी का उल्लेख होता है। जो एक बार यहाँ की चाय पी लेता है वह उसी चाय का दीवाना हो जाता है क्योंकि यह चाय स्फूर्ति के साथ हमारे शरीर को प्रतिरोधक क्षमता भी देता है। बात चाय की आती है तो कौसानी चाय बागान भी ब्रिटिश सरकार के समय आसाम दार्जलिंग व अन्य ढलान वाले पहाड़ी सीढ़ीनुमा खेत उपयुक्त माने जाते हैं जो उन दिनों कौसानी भी उपयुक्त यह कारोबार फैला। चाय बागान व चाय फैक्ट्री क्षेत्रीय लोगो के मुख्य आय का श्रोत है। जिस भी काश्तकार ने अपने नाप खेत मे चाय के पौधे लगाये है उनके एक परिवारिक सदस्य को मासिक निर्धारित बेतन भुगतान किया जाता है बदले में काश्तकार सप्ताह के 5/6 दिन चाय पत्तीयों को तोड़कर चाय फैक्ट्री दे आता है।

अब बात करते हैं कौसानी के पिंगलकोट गाँव की। अक्सर हमारे उत्तराखण्ड में जगहों का नाम पूर्व मे स्थित राज्यों जिलों राजघराने के आधार पर रहा होता है ठीक उसी प्रकार कौसानी का गाँव पिंगलकोट कभी राजा बाज बहादुर चंद की ग्रीष्मकालीन राजधानी रही। बूढ़े बुजुर्गो बताते हैं कि कौसानी ऐतिहासिक दृष्टि से चंद वंश के राजा बाजबहादुर चंद का पसंदीदा स्थान रहा है। पिनाथ बूढ़ा पिनाथ यहाँ का एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है जिसका निर्माण चंद काल मे राजा बांज बहादुर चंद ने इतने बिराने मे किया है। पिनाथ शिवजी के प्रिय धनुष का नाम था जिसको राम भगवान द्वारा माता जानकी के स्वयंवर मे तोड़ दिया गया। इस धनुष टूटने की आवाज तीनों लोक मे गूंजने से परशुराम जी स्वयंवर स्थल पहुँचते है फिर रामायण का परशुराम लक्ष्मण सम्वाद होता है। पिनाथ नाम रखने का मुख्य कारण इन पहाड़ियों का आकार धनुसनुमा होना बताया गया।

इस मन्दिर मे कई जानवरों के आकार के क्लाकृतिया हैं मूर्ति हैं जिसमें घोड़ा, हाथी, बैल सिंह आदि के है। मन्दिर के पास ही एक कुंआ है जो प्राकृतिक जलस्रोत है। इस मन्दिर मे एक बाबाजी अभी भी पूरे वर्ष भर वही रहते हैं। शाम को मन्दिर परिसर पर बाघ का गरजना आम बात है। बैसाख व कार्तिक महीने मे यहाँ भण्डारा पूजा कार्यक्रम होता है मन्दिर तक 7 किलोमीटर पैदल मार्ग काटली रुद्रधारी जल प्रपात से होते हुए खड़ी चढ़ाई से होकर जाना होता है।

पूर्व में काफी धार्मिक यात्र यही से होते पाण्डवखोली द्वाराहाट होते दूनगिरी के दर्शन कर आगे चार धाम यात्रा भी होती थी। इसी मार्ग से गढ़वाल क्षेत्र के चरवाहे भाभर के तरफ आना जाना करते है जिस रास्ते को गूगल भी नहीं जानता है। पीनाथ के बाद 2 किमी के लगभग बूढ़ा पीनाथ महादेव का मन्दिर भी है जो किसी टापू पर स्थित है जो काफी दूर से भी दिखाई देता है।

बर्ड वचिंग के लिए उपयुक्त जगह पीनाथ के जंगल है यहाँ ट्रेकिंग कैम्पिंग भी मन्दिर परिसर के अनुमति लेकर किया जा सकता है।

ज्योतिष की बातें- 259

16 दिसम्बर 2025 को सूर्य मित्रराशि धनु में प्रवेश करेगा, जहाँ पर मंगल के साथ युति भी होगी तथा गुरु और शनि की दृष्टि भी रहेगी। अत: सूर्य बली वह कुछ सौम्य रहेगा। अगले एक माह सूर्य स्वास्थ्य आदि अपने कारक विषयों में तुला, कर्क, मीन व कुम्भ राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। अन्य राशियों के लिए सूर्य सामान्य रहेगा। सौर पौष मास अर्थात् खरमास प्रारम्भ होने के कारण अगले एक माह विवाह, गृह प्रवेश आदि शुभ कार्य वर्जित रहेंगे।

20 दिसम्बर 2025 को शुक्र धनु राशि में प्रवेश करेगा, जहाँ पर सूर्य और मंगल से युति होगी तथा गुरु और शनि की दृष्टि भी पड़ेगी अत: कुल मिलाकर शुक्र निर्बल ही रहेगा। फल दीपिका के आधार पर अगले 24 दिन शुक्र सांसारिक सुख आदि अपने कारक विषयों में कर्क, मिथुन व मीन राशि के लिए शुभ नहीं होगा लेकिन अन्य नौ राशियों के लिए सामान्य फलदायक रहेगा।

21 दिसम्बर 2025 को सूर्य सायनमान से मकर राशि में प्रवेश करेगा अत: शिशिर ऋतु का प्रारम्भ हो जाएगा। जो लोग त्रिफला चूर्ण का वर्ष भर नियमित सेवन करते हैं उन्हें अगले दो माह तक उसमें छठा भाग पीपल चूर्ण मिलाकर सेवन करना स्वास्थ्यप्रद रहेगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 149

गोदुग्ध भी हितकारक नहीं

गाय का दूध अमृत माना जाता है लेकिन फिर भी किसी भी प्रकार का लाभ होता नहीं दिखता। आजकल अधिकतर लोग जर्सी गाय का दूध प्रयोग करते हैं जोकि हितकारक नहीं कहा जा सकता है। देसी गाय का दूध भी विभिन्न कारणों से लाभदायक नहीं रहा।

1. गायों को जो भोजन कराया जाता है वह बाजार से खरीद कर खिलाया जाता है। गायों को उनके मन का भोजन नहीं मिलता है। पहले गायें जंगल में चरती थीं और अपनी मनपसन्द घास खाती थीं, तब उनका दूध भी उत्तम होता था।
2. गायों को अब एक निश्चित चहारदीवारी के अन्दर रहना पड़ता है, उन्हें घूमने फिरने को नहीं मिलता और शारीरिक संसर्ग तो कदापि प्राप्त नहीं पाता। इस कारण उनका स्वास्थ्य कमजोर और मन दुखी रहता है।
3. जब बछड़ा पैदा होता है तब उस बछड़े को गाय लाड़ प्यार नहीं कर पाती, अपने बछड़े को एक महीने भी दूध नहीं पिला पाती। बछड़े को तुरन्त ही गाय से अलग कर दिया जाता है। फिर उस दुखी गोमाता का दूध दुहने के लिए उसका मालिक क्रूर साधनों का उपयोग करता है इस कारण गाय के दूध में रक्त के गुण आ जाते हैं। रक्त का उत्पादन क्रूरता की पराकाष्ठा से होता है और दूध का उत्पादन प्रेम की पराकाष्ठा से होता है। किसी भी स्तनधारी जीव में जब प्रेम की पराकाष्ठा होती है तभी उसके स्तनों से दूध बहता है।

गोसेवा के सन्दर्भ में कहा गया है कि पहले एक महीने तक चारों थनों का दूध बछड़े को मिलना चाहिए। अगले एक महीने तीन थनों का दूध बछड़े के लिए होता है और एक थन का दूध मनुष्यों के लिए। तीसरे महीने में दो थनों का दूध बछड़े के लिए और दो थनों का दूध मनुष्य के लिए। इसी प्रकार आगे समझना चाहिए लेकिन आजकल बछड़े को एक दिन भी दूध प्राप्त नहीं होता है। गोमाता पर इतनी क्रूरता होने से उसका दूध हितकारक कैसे हो सकता है? इस पर विचार करना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

टनकपुर में स्थापित होगा मिनी विकास भवन

चम्पावत। आदर्श चम्पावत की परिकल्पना के अनुरूप तथा टनकपुर क्षेत्र की वर्षों पुरानी जनभावनाओं को सम्मान देते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में पूर्णागिरी तहसील, टनकपुर को मिनी विकास भवन/बार भवन का निर्माण अब शीघ्र ही 533.79 लाख रुपये की अनुमानित लागत से प्रारम्भ होने जा रहा है।

मुख्यमंत्री धामी द्वारा टनकपुर में मिनी विकास भवन स्थापित किए जाने का प्रमुख उद्देश्य पहाड़ी एवं मैदानी क्षेत्रों से जुड़े नागरिकों को प्रशासनिक सेवाएं उनकी दहलीज पर उपलब्ध करना है ताकि लोगों को सामान्य कार्यों के लिए जिला मुख्यालय बार-बार न जाना पड़े। टनकपुर इस जिले का व्यापारिक, धार्मिक, परिवहन एवं सीमा सम्बन्धी गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र है, ऐसे में यहाँ मिनी विकास भवन बनने से न केवल स्थानीय प्रशासनिक पहुँच सुगम होगी, बल्कि पूर्णागिरी धाम आने वाले लाखों श्रद्धालुओं, सीमान्त क्षेत्र के ग्रामीणों, व्यावसायिक गतिविधियों से जुड़े लोगों को त्वरित सेवाएं उपलब्ध कराना भी सम्भव हो सकेगा। यह भवन आदर्श चम्पावत मॉडल के अनुरूप एकीकृत प्रशासनिक सेवाओं का हब बनेगा, जिसमें राजस्व, विकास, सामाजिक, जन शिकायतों के निस्तारण तथा अन्य आवश्यक विभागों की सेवाएं एक ही परिसर में उपलब्ध होंगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

भवाली सेनिटोरियम बनेगा मल्टी स्पेशलिटी अस्पताल

नैनीताल। भवाली का प्रसिद्ध क्षय रोग अस्पताल (टीबी सेनिटोरियम) की जगह मल्टी स्पेशलिटी अस्पताल बनाने की तैयारी है। सरकार ने इसके लिये सैद्धान्तिक सहमति दे दी है। इसके लिये 250 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। 200 वेड वाले अस्पताल के लिए वित्त विभाग को प्रस्ताव भेजा गया है। निर्माण एजेंसी ब्रिज एण्ड रूफ (बीआर) को मास्टर प्लान तैयार करने के निर्देश हैं।

हेली सेवा से भी होंगे पूर्णागिरी दर्शन

टनकपुर। सुप्रसिद्ध पूर्णागिरी धाम में तीर्थ यात्रियों को आधुनिक, सुरक्षित और तीव्र परिवहन सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में बड़ा कदम उठाया जा रहा है। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने क्षेत्रवासियों व श्रद्धालुओं को बड़ी सौगात देते हु चूका क्षेत्र में हेलीपैड निर्माण को मंजूरी दी है। इससे पूर्णागिरी क्षेत्र में विकास कार्यों को नई गति मिलेगी।

महन्त बलवन्त गिरी को याद किया

रानीखेत। महाभारत कालीन सभ्यता को संजोए पाण्डवों की शरणस्थली पाण्डव खोली में महन्त बलवन्त गिरी महाराज की 32वीं पुण्यतिथि पर आयोजित वार्षिक उत्सव समारोह सम्पन्न हुआ। भजन-कीर्तन के अलावा भण्डारे पर दूर-दूर से लोग पधारे। संचालन पूर्व जिला पंचायत सदस्य राजेन्द्र सिंह बिष्ट ने किया।

नगर आयुक्त तैनाती मांग को लेकर प्रदर्शन

अल्मोड़ा। नगर निगम अल्मोड़ा में नगर आयुक्त की नियुक्ति करने और बन्दरों से निजात की मांग को लेकर पार्षदों ने धरना प्रदर्शन किया। पार्षदों का कहना है कि नगर निगम के अस्तित्व में आने के बाद से अब तक यहाँ स्थाई नगर आयुक्त की नियुक्ति नहीं होने से तमाम दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। जबकि बन्दरों के डर से बच्चों का स्कूल जाना भी मुश्किल हो गया है।

दीक्षांत समारोह के अतिथि होंगे राज्यपाल

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का 10वां दीक्षान्त समारोह आगामी 12 जनवरी को होगा, जिसके मुख्य अतिथि राज्यपाल होंगे। बताया गया है कि स्नातक स्तर पर 10 और स्नातकोत्तर स्तर पर 18 शिक्षार्थियों को गोल्ड मेडल मिलेंगे।

बागजाला में सड़क निर्माण शुरू

हल्द्वानी। अ.भा.किसान महासभा बागजाला कमेटी के सौ दिनों से चल रहे आन्दोलन का असर हुआ है कि बागजाला में लोनिवि ने सड़क निर्माण शुरू कर दिया। भाकपा(माले) जिला सचिव कैलाश पाण्डे ने इसे संघर्ष की पहली जीत बताया है।

बागेश्वर रेल लाइन से अल्मोड़ा, चम्पावत व लोहाघाट को भी जोड़ें

बनबसा/टनकपुर। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन अपने दो दिवसीय भ्रमण के तहत एनएचपीसी बनबसा हेलीपैड पहुँचे। यहाँ आयुक्त दीपक रावत, डीएम मनीष कुमार, पुलिस अधीक्षक अजय गणपति सहित विभिन्न विभागों के अधिकारीगण व जनप्रतिनिधियों ने उनका स्वागत किया। आयोजित समीक्षा बैठक में मुख्य सचिव ने चम्पावत जिले में संचालित महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं की प्रगति का व्यापक आकलन किया। ब्रिडकुल द्वारा बनाए जा रहे पुलों सहित विभिन्न आधारभूत परियोजनाओं की समीक्षा की गई। मुख्य सचिव ने पूर्णागिरी रोपवे को शारदा कॉरिडोर के साथ समन्वय स्थापित कर निर्धारित समयसीमा में पूरा करने तथा रोपवे निर्माण कम्पनी को प्रत्येक सप्ताह प्रगति रिपोर्ट डीएम को उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने बागेश्वर रेलवे लाइन के सन्दर्भ में चम्पावत और लोहाघाट के साथ-साथ अल्मोड़ा को जोड़ने हेतु विस्तृत एलाइमेंट तैयार करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने बाढ़ सुरक्षा कार्यों की समीक्षा भी की।

राजस्व गांव की मांग, धनगढ़ी में धरना

रामनगर। भाजपा सांसद अनिल बलूनी की वादा खिलाफी से नाराज ग्राम सुन्दर खाल व देवीचौड़ा खत्ता के ग्रामीणों ने कॉर्बेट नेशनल पार्क के धनगढ़ी गेट के बाहर धरना देकर आक्रोश व्यक्त किया। साथ ही चेतावनी दी कि 25 दिसम्बर तक वन गाँवों में विजली, पानी आदि की मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराने तथा राजस्व ग्राम की मान्यता नहीं दिए जाने पर सांसद अनिल बलूनी एवं भाजपा सरकार के खिलाफ हल्ला बोल कार्यक्रम शुरू किया जायेगा।

धनगढ़ी गेट पर धरना प्रदर्शन के दौरान ग्रामीणों ने कहा कि पिछले वर्ष अप्रैल माह में लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा सांसद अनिल बलूनी ने गांव में आकर वादा किया था कि चुनाव जीतने के एक माह के भीतर उनके गांव में बिजली आ जाएगी परन्तु आज डेढ़ साल बाद भी उनके गांव में बिजली नहीं पहुंची है। इस बीच ग्रामीण दो बार सांसद बलूनी से मिलने दिल्ली जा चुके हैं। तब भी सांसद ने गांव वासियों को एक सप्ताह के भीतर बिजली पानी व मूलभूत सुविधाएं देने का आश्वासन दिया था वो भी पूरा नहीं हुआ। कहा चुनाव के समय वायदे करने वाले भूल जाते हैं।

गंगोलीहाट में रजत जयन्ती पार्क बनेगा

गंगोलीहाट। राज्य गठन के 25 साल पूरे होने पर नगर को रजत जयन्ती पार्क की सौगात है। 76 लाख की लागत से बनने वाले इस पार्क के लिये 30 लाख की धनराशि नगर पालिका को प्राप्त हो चुकी है।

रजत जयन्ती पर प्रदेश भर के निकायों में पार्कों का निर्माण किया जा रहा है। गंगोलीहाट नगर में टूरिस्ट रेस्ट हाउस के समीप लगभग 5 नाली भूमि में पार्क निर्माण की स्वीकृति मिल गई है। नगर क्षेत्र में पहली बार पार्क की सौगात से खुशी है। पार्क में बच्चों के लिए झूले आदि लगाए जाएंगे। बुजुर्गों के टहलने के लिए सर्किल पाथ बनेगा। पार्क में युवाओं के लिए पुस्तकालय भी बनाई जाएगी। इससे युवाओं को शान्त वातावरण में अध्ययन की सुविधा मिलेगी।

पालिकाध्यक्ष विमल रावल ने बताया है कि 76 लाख की लागत से बनने वाले इस पार्क की पहली किस्त के रूप में 30 लाख रुपये की धनराशि प्राप्त हो चुकी है। जल्द ही पार्क का निर्माण शुरू किया जायेगा।

नामिक में जैम्यालों ने किया रायछन देवता का यज्ञ

विधायक व ब्लाक प्रमुख ने दिया मंदिर सौन्दर्यीकरण का वचन

पत्रकार मनोज बोथियाल

मुनस्यारी/बागेश्वर। दूरस्थ ग्राम देवों की भूमि नामिक में जैम्याल परिवार द्वारा रायछन देवता का यज्ञ किया गया। इस भव्य आयोजन में विधायक हरीश धामी, श्रीमती दीपका धामी, ब्लाक प्रमुख डॉ. कविता महर ने पहुंचकर क्षेत्रवासियों की सुख समृद्धि की कामना की। इससे पूर्व यज्ञ में विशेष पूजा-अर्चना में जुटे क्षेत्रवासियों ने ढोल-नगाड़ों के साथ क्षेत्रीय विधायक व अतिथियों का शाल ओढ़ाकर स्वागत किया। मौके पर विधायक और ब्लाक प्रमुख ने अपन-अपने स्तर से मन्दिर कमेटी को आर्थिक सहयोग व मन्दिर सौन्दर्यीकरण का आश्वासन दिया। इस अवसर पर प्रधान सुरेश पहाड़ी, क्षेत्र पंचायत सदस्य चम्पा देवी, लक्ष्मण सिंह जैम्याल, भगवान सिंह जैम्याल, विधायक प्रतिनिधि जगत बथ्वाल, हीरा चिराल मौजूद थे।

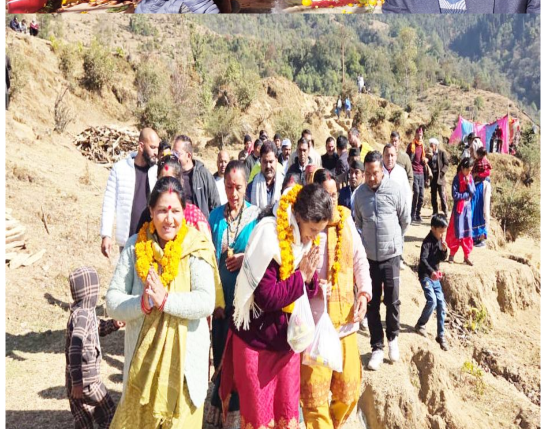

सांसदों ने उठाया टिहरी झील कार्यों पर सवाल

देहरादून। हरिद्वार सांसद त्रिवेन्द्र सिंह रावत, टिहरी सांसद माला राज्य लक्ष्मी सहित दो अन्य सांसदों ने संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन टिहरी झील क्षेत्र परियोजना से सम्बन्धित विकास कार्यों को लेकर केन्द्र सरकार से सवाल किए। पूछा कि भूस्खलन और बाढ़ जोखिमों को कम करने के लिए क्या किया गया।

समकोट गांव में शराब पर सख्ती

मुनस्यारी। समकोट ग्राम पंचायत में शराब की बिक्री करने वालों के खिलाफ अभियान शुरू हो चुका है। ग्रामीणों ने शराब मुक्त ग्राम का संकल्प लेते हुए निर्णय लिया है कि कोई भी व्यक्ति शराब बेचते हुए पकड़ा गया तो उस पर 50 हजार का जुर्माना लगाया जाएगा। साथ्ह ही तस्करों को पुलिस के सुपुर्द भी किया जाएगा। ग्राम प्रधान मंजू देवी की अध्यक्षता में ग्राम पंचायत की खुली बैठक में शराब के कारण प्रभावित हो रही युवा पीढ़ी व खराब माहौल पर चर्चा के बाद यह निर्णय लिया गया।

परिक्रमा

बागेश्वर उत्तरायणी मेले की तैयारी

बागेश्वर। उत्तरायणी मेला 2026 की तैयारियों को लेकर जिलाधिकारी आकांक्षा कोडे की अध्यक्षता में प्रथम बैठक आयोजित की गई। जिसमें मेले को आकर्षक एवं भव्य बनाने सम्बन्धी सुझाव दिए गए। डीएम ने कहा सभी विभाग अपनी कार्ययोजना तैयार करें। उन्होंने निर्देश दिया कि मेले की सज्ज के अन्तर्गत सभी दुकानों पर एक समान फ्लैक्सी बोर्ड लगाए जाएं तथा एकरूपता में स्थापित किए जाएं। दर्जा मंत्री शिव सिंह बिष्ट ने सभी विभागों और जनता के सहयोग को महत्वपूर्ण बताया।

काशीपुर बाईपास में चौड़ाई कम की मांग

रुद्रपुर। सीएम के रुद्रपुर आगमन अवसर पर महापौर विकास शर्मा ने शहर के कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा के साथ ही काशीपुर बाईपास की चौड़ाई कम करने की मांग की। कहा राजस्व व अन्य अभिलेखों के परीक्षण के पश्चात यह पाया गया है कि मार्ग की चौड़ाई में समरूपता नहीं है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

ज्ञान-विज्ञान को......

प्रथम पृष्ठ का शेष

उन्होंने जब चार संहिताएँ बना दीं तो इसके बाद फिर उनमें कोई फेरबदल घटा-बढ़ी नहीं हुई। जितना जुड़ा और जो जुड़ा वह थोड़ा-सा ही था, इसे परिशिष्ट माना गया। इससे कुछ विद्वानों ने यह निष्कर्ष भी निकाला है कि वेदव्यास ने ही पिछले तीन हजार साल से चलती आ रही मंत्र रचना की परम्परा को पूर्णविराम दिला दिया, शायद इसलिए कि तब तक मन्त्र रचना की क्वालिटी में काफी गिरावट आने लगी थी।

वेदव्यास ने न केवल चार संहिताओं को अन्तिम रूप से ग्रन्थ का आकार दे दिया, बल्कि देश भर में इसके पठन पाठन की एक ऐसी गुरु शिष्य परम्परा का भी विकास कर दिया कि वेदों का अध्ययन-अध्यापन सारे देश में होने लगा। इस गुरु-शिष्य परम्परा का एक लाभ यह हुआ कि वेदों की प्रतिलिपियाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी लिखी जाने लगीं और उन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी याद किया जाने लगा। परिणामस्वरूप चारों वेदों का एक शब्द तो क्या, एक मात्रा भी इधर-उधर नहीं होने पाई। सम्पूर्ण मन्त्र राशि हमारे पास पूरी तौर पर अविकृत रूप में है और इसकी ज्ञान-परम्परा हमारी स्मृतियों का अमिट हिस्सा बन गई है। वेदों को इस तरह से हमेशा के लिए सुरक्षित कर देने के लिए उसे सैकड़ों गुरु-शिष्यों की शाखाओं में फैला देने के कारण भी कृष्ण द्वैपायन का वेदव्यास नाम सार्थक लगता है।

तो क्या वेदव्यास ने अठारह महापुराणों की भी रचना की थी? परम्परा शिथिल रूप से ऐसा ही मानती है। भागवत महापुराण की रचना वेदव्यास ने की और उनके ही पुत्र शुकदेव ने उसे राजा परीक्षित को सुनाया, इन और दूसरे तर्कों के आधार पर एक यह धारणा लोगों के बीच बिठा दी गई है कि सभी अठारह महापुराणों की रचना वेदव्यास ने की थी। पर इतिहास के लिए दूसरे घटनाचक्र को थोड़ा गम्भीरता से विचारेंगे तो इसका तार्किक निष्कर्ष हम पा सकते हैं। ठीक-ठीक तारीख बता पाना शायद आज सम्भव नहीं होगा, परन्तु महाभारत के करीब एक हजार साल के बाद नैमिषारण्य में एक बहुत बड़ा हुजूम इकट्ठा हुआ था। अगर घटनाओं के सिलसिले को उनके सही सन्दर्भों में समझा जाए तो शौनक मुनि ने इस विशाल हुजूम को वहाँ जुटाया था। उस समय, यानी महाभारत से करीब एक हजार साल बाद जिन शौनक ऋषि ने नैमिषारण्य में इतने बड़े ऋषि मुनि समुदाय को इकट्ठा किया, जाहिर है कि वे उसी शौनक ऋषि के उत्तराधिकारी वंशज थे जिनका कभी मन्त्र रचना में भारी योगदान रहा था। और इन शौनक मुनि को एक ही स्थान पर इतने सारे मुनियों को इकट्ठा करने की जरूरत अनुभव हुई तो निश्चित ही कोई बहुत बड़ा संकट देश और समाज के सामने आ खड़ा हुआ होगा। सूत जी को इस विराट सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में बुलाया गया था और शौनक के नेतृत्व में सभी ऋषि मुनियों ने उनसे खूब सवाल किए, जवाब पाए। नैमिषारण्य की इस महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना पर हम आगे चलकर कभी लिखेंगे। पर इस लम्बे, शायद कई महीनों तक चले सम्वाद में जो कुछ उभरा, उसकी को अलग-अलग पुराणों में विस्तृत रूप से लिपिबद्ध किया गया है और उस प्रयास में नैमिषारण्य सम्वाद के तत्काल बाद की सदियों में उन पुराणों में काफी कुछ जोड़ा जाता रहा है। इसलिए प्रश्न यह है कि अगर उन पुराणों की रचना इस तरह से हुई तो उनका सम्बन्ध वेदव्यास से क्या है? महाभारत और भागवत पुराण में जिस नई शैली का, जो एक तरह से बाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड की शैली पर आधारित है, सूत्रपात हुआ, सारे पुराण-उपपुराण चूँकि इसी शैली पर आधारित हैं, इसलिए वेदव्यास के प्रभाव को वेदव्यास की रचना के रूप में मान लिया गया। दूसरा कारण यह हो सकता है कि हमारे देश की साहित्य परम्परा में किसी पुराण संहिता नामक एक ग्रन्थ की रचना को वेदव्यास को दिया जाता है। चूँकि सभी पुराण किसी न किसी रूप में इस पुराण संहिता से अनुप्राणित रहे होंगे, इसलिए सभी पुराणों के साथ वेदव्यास का नाम जोड़ दिया जाना अस्वाभाविक नहीं लगता।

पर जिन वेदव्यास ने चारों वेदों को अन्तिम रूप से पुस्तक रूप में बांधा, एक लाख श्लोकों वाले महाभारत प्रबन्ध काव्या को लिखने वाली टीम को नेतृत्व दिया, चारों वेदों क हिफाजत के लिए गुरु-शिष्य परम्परा का प्रवर्तन किया, पुराण संहिता के रूप में आगे लिखे जाने वाले पुराणों-उपपुराणों की रचना का बीज बो दिया, भागवत महापुराण इस देश को दिया, कुरुवंश को नष्ट न होने देने के लिए विचित्रवीर्य के वेहावसान के बाद उसकी पत्नियों, अम्बिका और अम्बालिका के साथ अपनी माँ सरस्वती के आदेश पर नियोग कर धृतराष्ट्र और पाण्डु का जन्म होने में सहायता की, भयानक तनावों से ग्रस्त उस संकटपूर्ण युग में हमेशा धर्म और न्याय के मार्ग ही दिखाया और आजीवन आठ पीढ़ियों में फैले अपने दीर्घ, लम्बे जीवन में अनवरत सक्रियता दिखाई, इन वेदव्यास का जीवन कितनी निराशा में खत्म हुआ होगा, इसका नमूना यह श्लोक है, जिसमें वेदव्यास ने अपनी भयावक व्यथा व्यक्त की है। ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चित् श्रृणोति माभ्-धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते?

वेदव्यास की व्यथा है कि 'मैं बाहें उठाकर लोगों को समझा रहा हूँ कि धम से ही अर्थ और काम क प्राप्ति होती है, इसलिए क्यों नहीं धर्म के मार्ग पर चलते? पर कोई मेरी सुनता ही नहीं।' वेदव्यास की व्यथा हर उस जागरूक व्यक्ति की पीड़ा है, जो जानता है कि कैसे दुनिया ठीक चल सकती है, पर जिसकी सुनी नहीं जाती।

(साभार नवभारत टाइम्स)

भरत रावत बने जलागम के परियोजना के उप निदेशक

थल/नाचनी। एरीज नैनीताल में सहायक रजिस्ट्रार भरत सिंह रावत को प्रदेश सरकार ने तीन वर्षों के लिए जलागम में उप निदेशक (परियोजना) के पद पर नियुक्त किया है। वह पिथौरागढ़ जिले के साथ ही अल्मोड़ा जिले में जलागम की ओर से संचालित परियोजनाओं को देखेंगे। इस उपलब्धि पर श्री रावत के गृह क्षेत्र नाचनी में खुशी है। रावत पूर्व में एफसीआईक्यू और एसएबीएआरडी (एलडीबी) में शाखा प्रबन्धक, आर्डिनेंस फैक्ट्री बोर्ड, रक्षा मंत्रालय में सहायक स्टाफ अधिकारी और उ0 मुक्त विश्वविद्यालय में कुलसचिव के पद पर कार्य चुके हैं।

मुनस्यारी महोत्सव में सांस्कृतिक झांकी और सजा बाजार

मुनस्यारी। इस बार भी हिमनगरी में मुनस्यारी महोत्सव का जोरदार आयोजन किया गया। महोत्सव में सांस्कृतिक झांकी के अलावा पर्वतीय उत्पादों का बाजार सजा। महोत्सव का उद्घाटन विधायक हरीश धामी ने दीप प्रज्ज्वलित करने के साथ ही महोत्सव समिति को 5 लाख रुपये देने की घोषणा की जिससे आगामी आयोजनों और और अधिक विस्तृत व सशक्त तरीके से सम्पन्न किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि अपनी समृद्ध परम्परा को दर्शाने के लिये ऐसे महोत्सव अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। विशिष्ट अतिथि क्षेत्र प्रमुख डॉ.कविता महर तथा विधायक प्रतिनिधि जगह सिंह महर थे। महोत्सव समिति के अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह पांगती ने अतिथियों का स्वागत किया। उद्घाटन अवसर पर नगर में भव्य सांस्कृतिक जुलूस निकाला गया। संचालन लक्ष्मण सिंह पांगती और भीमराम ने किया। इस अवसर पर पूर्व ब्लाक प्रमुख नरेन्द्र सिंह रावत, जितेन्द्र जेष्ठा, रवि बृजवाल, श्रीरीमसिंह धर्मशक्तू, सहित अन्य लोग मौजूद थे।

कनार मेले में देव डांगरों का आशीर्वाद

अस्कोट। बरम से 16 किमी दूर कनार कोकिका मैया के मन्दिर में कनार का प्रसिद्ध मेले सम्पन्न हुआ। अपनी मनौतियों को लेकर श्रद्धालु रातभर दीया हाथ में लेकर तपस्यारत रहे, जिन्हें देव डांगरों ने अवतरण के बाद आशीर्वाद दिया। मेले में बलुवाकोट, जाराजिबली, बजानी, गरखा, चर्मा, डीडीहाट, जौलजीवी, मुनस्यारी, धारचूला कई जगहों से लोग उपस्थित हुए।

शीतकालीन यात्रा का आगाज

रुद्रप्रयाग। पंचकेदार गद्दीस्थल ओंकारेश्वर मन्दिर ऊखीमठ में शीतकालीन यात्रा का विधिवत एवं मंत्रोच्चार के साथ आगाज हो चुका है। यात्रा शुभारम्भ अवसर पर विधायक आशा नौटियाल, बद्री केदार मन्दिर समति के उपाध्यक्ष विजय कप्रवाण, डीएम प्रतीक जैन ने विधिवत पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर समिति के सदस्य विनीत पोस्त, नगर पंचायत अध्यक्ष कुब्जा धर्मवान, ब्लाक प्रमुख पंकज शुक्ला, सीडीओ राजेन्द्र सिंह रावत भी मौजूद थे।

रवांई शरदोत्सव में मधुर धुनें

बड़कोट। नगर पालिका बड़कोट में आयोजित सात दिवसीय रवांई शरदोत्सव संस्कृति एवं पर्यटन विकास मेले में मधुर धुनें सुनने को मिलीं। पालिका अध्यक्ष विनोद डोभाल और नगर पालिका मुनि की रेती की अध्यक्ष नीलम बिजल्वाण, ब्लाक प्रमुख सरोज पंवार, चिन्यालीसौड़ पालिकाध्यक्ष मनोज कोहली, शिक्षक संघ अध्यक्ष अवतार चौहान सहित तमाम लोग मौजूद थे। सात दिवसीय मेले में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के अलावा विभिन्न सामानों की दुकानें सजीं, जिसमें बड़ी संख्या में क्षेत्र वासियों ने खरीद की।

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क
7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान)
मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी

मो.न. 8958525979, 9411134775
फोन सम्पर्क- 05961-222236

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पौष मास की कड़क ठण्ड

इस बार ज्यादा बर्फबारी की सम्भावना

पारा गिरा, जलस्तर में गिरावट

पि.हि. प्रतिनिधि

फोटो- केशव भट्ट

पौष मास की कड़क ठण्ड के साथ कारोबार प्रभावित हैं। उत्तराखण्ड में कहीं शुष्क तो कहीं पश्चिमी विक्षोभ का असर है लेकिन ठण्ड बदस्तूर है। मौसम वैज्ञानिक डॉ. रोहित थपलियाल के अनुसार भारत की ओर बढ़ रहा चक्रवात दित्वाह का असर हल्की बारिश के रूप में प्रदेश में पड़ा है। मौसम साफ होने पर पर्वतीय क्षेत्रों में पाला गिरने के साथ ही तापमान में गिरावट है। नैनीताल में आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ. नरेन्द्र सिंह के अनुसार फिलहाल हिमपात की सम्भावना नहीं है लेकिन सरोवर नगरी में इस माह के अन्त तक हिमपात की आशंका से इन्कार नहीं किया जा सकता है, जो पश्चिमी विक्षोभ पर निर्भर करता है। यदि पश्चिमी विक्षोभ शक्तिशाली रहे तो नगर के निचले हिस्से भी हिम चादर में तब्दील हो सकते हैं, जबकि ऊँची चोटियों पर हिमपात की अधिक सम्भावनाएं बनती हैं। इस वर्ष ला नीना के साथ नमी की मात्रा अधिक है, जिस कारण बर्फबारी की सम्भावना अधिक जताई जा सकती है। बर्फबारी का सटीक पूर्वानुमान पश्चिमी विक्षोभों की सक्रियता पर किया जा सकता है।

उच्च हिमालयी क्षेत्र में बर्फबारी और पारा गिरने से नदियों में जल स्तर गिरावट है। दिसम्बर के इस माह में पारा गिरने पर जल स्तर में गिरावट बरकरार रहने की सम्भावना है। टनकपुर से प्राप्त सूचना के अनुसार शारदा बैराज में न्यूनतम जलस्तर 10, 191 क्यूसेक दर्ज हुआ है। मुनस्यारी से सूचना प्राप्त हुई है कि क्षेत्र में कड़ाके की ठण्ड में प्रशसन ने अलाव की व्यवस्था कर पर्यटकों को राहत दी है। सूखी ठण्ड पड़ने के बाद व्यापारियों ने प्रशासन से राहगीर व अन्य लोगों के बचाव के लिये अलाव की व्यवस्था की मांग की थी।

इस बीच प्रदेश में लगातार शुष्क मौसम बरकरार है। राज्य के चार प्रमुख मौसम केन्द्रों देहरादून, पन्तनगर, मुक्तेश्वर और नई टिहरी में अधिकतम और न्यूनतम तापमान में उल्लेखनीय अन्तर दर्ज किया गया। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग देहरादून द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार रात को परा तेजी के साथ गिर रहा है। राजधानी देहरादून में अधिकतम तापमान 25.1 डिग्री दर्ज किया गया, जो सामान्य से 2 डिग्री अधिक है। वहीं, न्यूनतम तापमान 7.3 डिग्री रहा, जो सामान्य से 1 डिग्री नीचे है। हल्द्वानी व तराई भाबर में रात के समय ठण्डक तेजी से बढ़ रही है। रात को पारे में जबदस्त गिरावट है।

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

मो.– 9458920379, 6396098804

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

मो. 9760007148

www.mountainheights.in

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के रजत जयन्ती वर्ष पर शुभकामनाएं

प्रहलाद सिंह जंगपांगी

उत्तरांचल विहार
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया

'दुर्गा सदन', मुधवन इनक्लेव फेस-2
गैस गोदाम रोड
कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी

श्रीमती दमयन्ती जंगपांगी

(स्व.रणजीत सिंह जंगपांगी)
सुरभि कालौनी, फैस-2
मल्ली बमोरी, हल्द्वानी

पांगती आटोमोबाइल

जय गोलू मार्केट,
गरुड़ (बागेश्वर)
जी०एस० पांगती

जसवन्त सिंह पांगती

(बीमा अभिकर्ता/दुकानदार)
गरुड़ बाजार (बागेश्वर)

राम सिंह टोलिया

आकाशवाणी केन्द्र अल्मोड़ा
अल्मोड़ा

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)